पण्डित मधुसूदन ओझा स्मृति-संवाद एवं 'यज्ञविज्ञान' राष्ट्रीय परिसंवाद

(दिनांक 17 नवम्बर 2016)

प्रतिवेदन

श्री शंकर शिक्षायतन, नई दिल्ली एवं विद्याश्री न्यास, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक १७ नवम्बर २०१६ को संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सभागार में पं. मधुसूदन ओझा के रचनाओं के सन्दर्भ में 'यज्ञ-विज्ञान' विषयक राष्ट्रीय परिसंवाद का समायोजन प्रो. चन्द्रमा पाण्डेय की अध्यक्षता एवं. प्रभुनाथ द्विवेदी के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस राष्ट्रीय परिसंवाद में प्रो. हृदय रंजन शर्मा द्वारा बीज वक्तव्य एवं प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, डॉ. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी तथा सुनील कात्यायन द्वारा वक्तव्य दिये गये।

मुख्य अतिथि प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी ने अपने वक्तव्य में मधुसूदन ओझा के २०० से अधिक ग्रन्थों के विशाल वाङ्मय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि पण्डित ओझा ने वेद विद्या का बड़ा उपकार किया एवं केवल 'यज्ञ-विज्ञान' से सम्बन्धित २० से अधिक पुस्तकें लिखीं। प्रो. द्विवेदी ने यज्ञों के विविध प्रकारों की चर्चा करते हुए कहा कि यज्ञ के बिना हम जीवन की परिकल्पना नहीं कर सकते। प्रो. हृदयरंजन शर्मा ने अपने विद्वत्तापूर्ण बीज-वक्तव्य में बतलाया कि 'यज्ञ-विज्ञान' सृष्टि तथा जीवन के स्थूल एवं सूक्ष्म पक्षों की पूर्णता का प्राचीनतम सनातन (सदा गतिशील रहने वाला) विज्ञान है। आधुनिक विज्ञान आधिभौतिक जगत से सम्बद्ध दिक् (दिशा) देश (स्थान) तथा काल (समय) के स्थूल एवं सूक्ष्म स्वरूपों का अनुसन्धान करने में जहाँ समर्थ है, वही वैदिक यज्ञ-विज्ञान आधिभौतिक जगत् के साथ आधिदैविक तथा आध्यात्मिक जगत् से सम्बद्ध चेतना शक्ति के तात्त्विक स्वरूपों को प्रकाशित करके सृष्टि एवं जीवन को सुख-शान्ति एवं समृद्धि प्रदान करने वाला विज्ञान है। डॉ. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी ने कहा कि यज्ञ में जो हम आहुति प्रदान करते हैं, वह आहुति सूर्य को प्राप्त होती है, जिसके द्वारा मेघ वृष्टि, वृष्टि से अन्न एवं अन्न से सम्पूर्ण प्राणियों का पोषण होता है। प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी ने बताया कि मधुसूदन ओझा अद्वितीय प्रतिभा-सम्पन्न विद्वान् थे जिनकी रचनाओं पर गहन अध्ययन, मनन व चिंतन की आवश्यकता है। डॉ. सुनील कात्यायन ने यज्ञ में प्रयुक्त मन्त्रों, हवियों को ऋतु के विविध आयामों से जोड़ते हुए 'यज्ञ-विज्ञान' की व्याख्या की।

प्रो. चन्द्रमा पाण्डेय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बतलाया कि यज्ञ ही सृष्टि का मूल है। आज 'यज्ञ-विज्ञान' भारतीय एवं वैश्विक मनीषियों के लिए अति उपयोगी है। इस पर वैश्विक अनुसन्धान की महती सम्भावना है।

परिसंवाद का शुभारम्भ डॉ. उमापति दीक्षित के मङ्गलाचरण से हुआ। अभ्यागत अतिथियों का स्वागत डॉ. दयानिधि मिश्र, धन्यवाद ज्ञापन प्रो. धनञ्जय कुमार पाण्डेय एवं कार्यक्रम का सञ्चालन डॉ. शिवराम गंगोपाध्याय ने किया। इस परिचर्चा में प्रो. कौशलेन्द्र पाण्डेय, प्रो. राजाराम शुक्ल, प्रो. चन्द्रमौलि उपाध्याय, डॉ. उदयन मिश्र, डॉ. माधव जनार्दन रटाटे, डॉ. शंकर कुमार मिश्र, , डॉ. ध्रुवनारायण पाण्डेय आदि विद्वानों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के अनेक छात्र-छात्राओं एवं प्रबुद्ध श्रोताओं ने अपनी सक्रिय सहभागिता के द्वारा इस कार्यक्रम को सफल बनाया।